अमर उजाला

नई दिल्ली । शुक्रवार, 7 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

तेज होने की पहचान ज्यादा ज्ञानवान होना नहीं है बल्कि इसका मतलब कल्पना और सपने देखने की ताकत है।
-अल्बर्ट आइंस्टीन

प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी

मौसम चक्र में आ रहे परिवर्तन के कारण वर्ष दर वर्ष गर्मी के मौसम में तापमान में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है और गर्म हवाओं या लू से बढ़ते क्षेत्रों का दायरा बढ़ता जा रहा है, जिसकी वजह से जल संकट भी बढ़ता जा रहा है।

गर्मी की मार

देश का बड़ा हिस्सा जहां भीषण गर्मी की मार झेल रहा है, वहीं मानसून के आगमन में हो रही देरी ने बड़ी आबादी की तकलीफ और बढ़ा दी है। मौसम विभाग ने पहले अनुमान व्यक्त किया था कि दक्षिण पश्चिम मानसून इस वर्ष एक के बजाय छह जून तक केरल के तट से टकरा सकता है, लेकिन अब इसमें 48 घंटे की और देर बताई जा रही है। इसका असर देश के दूसरे हिस्सों खासतौर से उत्तर भारत पर भी पड़ेगा, जहां पारा नित नए रिकॉर्ड तोड़ रहा है। केरल से लेकर पंजाब और राजस्थान से लेकर ओडिशा तक सारा देश इस समय भीषण गर्मी की चपेट में है। जलवायु परिवर्तन पर हो रही चर्चाओं से इतर मानो पारा सारी कवायदों को झुठलाता जा रहा है। नतीजतन राजस्थान के चुरू में रविवार को तापमान 50.8 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा था, तो विदर्भ के चंद्रपुर में 49 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकॉर्ड किया गया। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप भले ही जलवायु परिवर्तन के खतरे को काल्पनिक बताएं, लेकिन मौसम चक्र में आ रहे परिवर्तन के कारण वर्ष दर वर्ष गर्मी के मौसम में तापमान में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है और गर्म हवाओं या लू से प्रभावित क्षेत्रों का दायरा बढ़ता जा रहा है। अपने देश का रिकॉर्ड बताता है कि इस मौसम में पिछले कुछ दशकों के दौरान अधिकतम तापमान में तीन से छह डिग्री सेल्सियस तक की बढ़ोतरी हो चुकी है। हालत यह है कि शिमला और नैनीताल जैसे ठंडे शहरों में इस हफ्ते तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस तक दर्ज किया गया है। राजस्थान, महाराष्ट्र और तेलंगाना सहित अनेक प्रभावित राज्यों में तीस लोगों की गर्मी या लू की वजह से मौत हो चुकी है। भीषण गर्मी का असर जल स्रोतों और भू-जल पर भी पड़ रहा है, जैसा कि रिपोर्ट बताती हैं कि पिछले कुछ वर्षों से सूखा से प्रभावित दक्षिण और मध्य भारत के अनेक राज्यों में भू-जल स्तर में तेजी से गिरावट आई है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान नए कालाहांडी के रूप में उभरा मराठवाड़ा तो मार्च से ही जल संकट से जूझ रहा है और इस क्षेत्र के बांधों और जलाशयों में मुश्किल से तीन फीसदी संचित जल बचा है! ऐसे हालात में एक सुकून की बात यही है कि मौसम विभाग का अनुमान है कि इस वर्ष मानसून देर से भले आए पर यह सामान्य रहेगा।

पाक का रक्षा बजट

रमजान का महीना आम तौर पर पाकिस्तान में शांत होता है, क्योंकि सरकारी कार्यालयों और शिक्षण संस्थानों में कम ही समय काम होता है। लेकिन इस बार पाकिस्तान के राजनीतिक गलियारों में सरगर्मी जारी रही। प्रधानमंत्री इमरान खान की सरकार न केवल विपक्षी पार्टियों के दबाव में, बल्कि सड़क पर आंदोलन कर रहे लोगों के दबाव में भी है, क्योंकि मुद्रास्फीति के आंकड़े में भारी वृद्धि हुई है। विपक्ष का मुख्य मुद्दा नवाज शरीफ की जेल की सजा को लेकर है कि जवाबदेही प्रक्रिया त्रुटिपूर्ण है और विपक्ष के नेताओं पर ही निशाना साधा जाता है। लोगों की उंगलियां सेना की तरफ उठ रही हैं, क्योंकि उसकी वजह से नवाज शरीफ और अन्य विपक्षी नेता जेल में होने के कारण जनता का नेतृत्व नहीं कर पा रहे हैं।

सेना का अचानक काफी चौंकाने वाला बयान आया कि उसने एक जनरल को उम्रकैद और एक ब्रिगेडियर तथा एक असैन्य डॉक्टर को मौत की सजा सुनाई है, जो खुफिया सेवा से जुड़कर जासूसी का काम कर रहे थे। सूत्रों के मुताबिक, यह मामला सेना के वरिष्ठ अधिकारियों एवं एक असैन्य डॉक्टर द्वारा परमाणु से संबंधित गुप्त सूचनाएं अमेरिका को बेचने से संबंधित है। आम तौर पर जासूसी के मामलों को पाकिस्तान सार्वजनिक नहीं करता, क्योंकि इससे दुश्मन को फायदा होता है। इसके बजाय वैज्ञानिक यह कहकर जासूसी के मामलों को कमतर बता देते हैं कि जो गुप्त जानकारियां दूसरे देश को दी गईं, वे अब अप्रासंगिक हैं। होना तो यह चाहिए था कि अपने ही अधिकारियों को जासूसी के लिए जिम्मेदार ठहराने और सजा देने पर सेना की तारीफ होती पर इसके बजाय देश भर में इसे लेकर शर्मनाक प्रतिक्रिया थी कि अगर परमाणु रहस्यों को सेना सुरक्षित नहीं रख सकती, तो कौन रख सकता है?

जहां तक मुझे याद है, पाक सेना ने पहली बार रक्षा बजट में कटौती की है। बहुत मुमकिन है कि कर्ज देने के एवज में आईएमएफ ने पाकिस्तान के सामने यह शर्त रखी हो।

मरिआना बाबर, पाकिस्तानी पत्रकार

लोकतांत्रिक सरकार के सामने फिर यह समस्या आई है कि सेना कुछ और ताकत चाहती है। इमरान खान यह जानते हैं, पर उन्हें किसी तरह की मुश्किल नहीं हो रही। बेनजीर भुट्टो और नवाज शरीफ की तरह वह सेना पर पलटवार करने के लिए तैयार नहीं हैं। सेना मुख्यालय को खुश करने के लिए प्रधानमंत्री नेशनल एसेंबली के स्पीकर को दो सांसदों का प्रोडक्शन ऑर्डर (संदिग्ध सांसदों के बारे में जानकारी और दस्तावेजों का खुलासा करना) लिखने की अनुमति नहीं दे रहे हैं, जो पुलिस हिरासत में हैं। ये दोनों सांसद मोहसिन डकार और अली वजीर निर्दलीय सदस्यों के रूप में चुने गए थे, लेकिन ये पख्तुन तहफ्फुज मूवमेंट (पीटीएम) के समर्थक हैं। ये दोनों अफगानिस्तान सीमा से लगे वजीरिस्तान में एक छोटे से विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे। सेना के एक चेक पोस्ट पर हालात तब काबू से बाहर हो गए, जब प्रदर्शनकारियों को आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी गई। नतीजतन पीटीएम के तेरह प्रदर्शनकारी मारे गए, कई घायल हुए, जबकि सेना के भी कुछ जवान मारे गए। उनकी गिरफ्तारी के बाद संसद में उनकी मौजूदगी के लिए आवाज उठने के बावजूद स्पीकर ने अपने फैसले से हटने से इनकार कर दिया। संसद में सबसे जोरदार आवाज पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता बिलावल भुट्टो की थी, जिन्होंने कई बार सरकार का विरोध किया है।

ईद के दौरान भारत और पाकिस्तान से कुछ बड़ी खबरें आईं। भारत के नए नौसेना प्रमुख ने नौसेना में मितव्ययिता से संबंधित कुछ नए उपायों की घोषणा की, जिनमें संस्कृति और धर्म से संबंधित कुछ पुरानी परंपराओं को खत्म करना भी शामिल है। इससे पाकिस्तान में ऐसा लगा कि नौसेना प्रमुख धर्मनिरपेक्ष भारत की झलक वापस लाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे भाजपा द्वारा हिंदुत्व की राजनीति कर सत्ता में आने से पहले दुनिया भर में सराहा जाता रहा है।

ईद की छुट्टी के दौरान पाकिस्तान के सेना प्रमुख ने नेशनल एसेंबली में नए वित्त मंत्री हाफिज शेख द्वारा बजट की घोषणा से पहले रक्षा बजट में स्वैच्छिक कटौतियों की घोषणा की। इससे हर कोई पूरी तरह आश्चर्यचकित था, क्योंकि जहां तक मुझे याद है, पाकिस्तानी सेना ने पहली बार रक्षा बजट में कटौती की घोषणा की है। तुरंत सैन्य प्रचार विंग आईएसपीआर के महानिदेशक जनरल आसिफ गफूर ने घोषणा की कि 'साल भर के लिए रक्षा बजट में स्वैच्छिक कटौती रक्षा और सुरक्षा की कीमत पर नहीं होगी। हम सभी संभावित खतरों के लिए प्रभावी प्रतिक्रिया क्षमता बरकरार रखेंगे। तीनों सेना उचित आंतरिक उपायों के जरिये कटौती के प्रभावों का प्रबंधन करेगी। जनजातीय क्षेत्रों और बलूचिस्तान के विकास में भागीदारी करना महत्वपूर्ण है।'

हालांकि भारतीय मीडिया ने यह खबर उठाई, तो वहां पाकिस्तान द्वारा यह कदम उठाने की विभिन्न कारणों से भारी आलोचना हुई। उस दिन ईद की छुट्टी थी और अमूमन जब तक बहुत जरूरी न हो, पाकिस्तान का विदेश मंत्रालय भारतीय मीडिया में छपने वाली खबरों की अनदेखी करता है। पर जनरल गफूर ने तुरंत ही स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि रक्षा बजट में कटौती भारत के हित में नहीं है, क्योंकि पाकिस्तानी एकजुट हैं और हमेशा सेना के साथ हैं। पाक सेना प्रमुख जनरल बाजवा ने एक बयान में कहा कि 'किसी भी खतरे के प्रति हमारी प्रतिक्रिया क्षमता और सेना के जीवन की गुणवत्ता पर इस कटौती का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। वेतन वृद्धि न करने का फैसला केवल अधिकारियों के लिए है, सैनिकों के लिए नहीं।'

यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि पाकिस्तान आर्थिक रूप से बहुत ही कमजोर है और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से लाखों डॉलर कर्ज लेने की प्रक्रिया में है। मुझे लगता है कि सैन्य बजट में कटौती का एक कारण यह हो सकता है, क्योंकि कर्ज का पैकेज देने से पहले आईएमएफ की यह अघोषित शर्त हो सकती है। पिछले कुछ वर्षों से पाक सेना धीरे-धीरे सैन्य सहयोग और सहायता के लिए अमेरिका के बजाय चीन और अन्य देशों का रुख करने लगी है। पर किसी भी विकासशील देश के लिए रक्षा खरीद पर अरबों डॉलर खर्च करना बुद्धिमानी नहीं है, जबकि उनके नागरिक गरीबी में डूबे रहे हों। अगर यह संस्कृति हमारे दौर में बदलती है, तो सुखद आश्चर्य होगा!

अंतर्ध्वनि

>> प्रतापनारायण मिश्र

ईश्वर की मूर्ति प्रेम है, जिसका केवल अनुभव किया जा सकता है

***वास्तव** में ईश्वर की मूर्ति प्रेम है, पर वह अनिर्वचनीय, परमानंदमय होने के कारण लिखने वा कहने में नहीं आ सकता, केवल अनुभव का विषय है। अतः उसके वर्णन का अधिकार हमको क्या, किसी को भी नहीं है। कह सकते हैं तो इतना ही कह सकते हैं कि हृदय मंदिर को शुद्ध करके उसकी स्थापना के योग्य बनाइए और प्रेम दृष्टि से दर्शन कीजिए तो आप ही विदित हो जाएगा कि वह कैसी सुंदर और मनोहर मूर्ति है।*

पर यह कार्य सहज एवं शीघ्र प्राप्य नहीं है। हमारे पूर्व पुरुषों ने ध्यान-धारण इत्यादि साधन नियत कर रखे हैं, जिनका अभ्यास करते रहने से उसके दर्शन में सहारा मिलता है। किंतु है यह भी बड़े ही भारी मस्तिष्कमानों का साध्य। साधारण लोगों से इसका होना भी कठिन है। विशेषतः जिन मतवादियों का मन भगवान के स्मरण में अभ्यस्त नहीं है, वे जब आंखें मूंद के बैठते हैं, तब अंधकार के अतिरिक्त कुछ नहीं देख सकते और उस समय यदि घर गृहस्थी आदि का ध्यान न भी करें, तो भी अपनी श्रेष्ठता और अन्य प्रथावलंबियों की तुच्छता का विचार करते होंगे। कारण इसका यह है कि मनुष्य का मन होता है चंचल। वह जब तक किसी बहुत ही सुंदर व भयंकर वस्तु अथवा व्यक्ति वा सुख-दुखादि की ओर न चला जाए, तब तक एकाग्र कदापि नहीं होता। हां, बड़े-बड़े योगी अभ्यास करते-करते उसे स्वेच्छानुवर्ती बना सकते होंगे, पर अपने सहवर्तियों में तो हम किसी का सामर्थ्य नहीं देखते कि संगीत, साहित्य, सुरा, सौंदर्य इत्यादि की सहायता के बिना कोई मन को एक ओर कर सकता हो। पूजा का अर्थ है सत्कार, और सत्कार उसका किया जाता है जिसे देख सुनके चित्त में प्रेम और प्रसन्नता आवै। अपने पूर्वपुरुषों के साधारण चिह्न के प्रति भी हमें स्वभावतः ममत्व होना चाहिए, यदि हम उनकी संतान हैं।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> स्वप्निल तिवारी

आत्महत्या के ख्याल से निकल जी रहा नई जिंदगी

मैंने लुप्तप्राय कारीगरों की कला बचाने के लिए एक मंच दिया, कलाकृतियों को संजोने का काम किया, ताकि कलाकार खुश रह सकें और कला संरक्षित हो सके। मैं उत्तर प्रदेश के लखनऊ का रहने वाला हूं। बचपन से ही डिस्लेक्सिया से ग्रसित होने के कारण जिंदगी काफी उतार चढ़ाव भरी रही। अन्य छात्रों की अपेक्षा स्कूल में कुछ भी सीखने के लिए मुझे काफी मेहनत करनी पड़ती थी। शब्दों को एक साथ जोड़कर पूरा वाक्य पढ़ना बुरे सपने के जैसा था। सहपाठी मुझे ताने देते थे और पागल कहते थे। इन सबका सामना करते हुए मैं आगे बढ़ ही रहा था कि एक दुर्घटना में मेरे पिता की मृत्यु हो गई। तब मेरी उम्र सिर्फ 12 साल थी। पिता की मौत के बाद मैं बेहद निराश हो गया। सोने के लिए मैं नींद की गोलियां खाने लगा। स्थिति कुछ ऐसी हो गई कि आत्महत्या के ख्याल आने लगे। फिर मेरा मन बदला और खुद को दोबारा एक मौका देने के बारे में सोचा। इसके बाद मैंने एमबीए किया, और बैंक ऑफ इंडिया में नौकरी मिल गई। वहां से रिजर्व बैंक गया, जहां कुछ दिन काम किया। लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं मिल रही थी। मैं कुछ ऐसा करना चाहता था, जिससे कि लोगों का भला हो सके। मैं देश के शिल्पकारों द्वारा बनाई जाने वाली कलाकृतियों को संजोने पर काम करना चाहता था। मैंने नौकरी छोड़ दी और शिल्पकारों से संपर्क करना शुरू किया। इसी बीच एक दिन मधुबनी के एक शिल्पकार से संपर्क करना चाहा, तो एक छोटी बच्ची ने फोन उठाया। उसने बताया कि हाल ही में बीमारी से उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। लड़की ने बताया कि, पिता के जाने के बाद उनकी स्थिति बदतर हो गई है। गांव के प्रधान रात में उसकी मां को लेकर जाते हैं और सुबह वापस छोड़ते हैं। उसके बाद मम्मी सिर्फ रोती रहती हैं। इस बातचीत से मुझे सदमा लगा और बेचैन हो उठा। मैंने उनकी सहायता करने की ठानी और मधुबनी पहुंच गया। मैंने किसी तरह उस बच्ची को खोजा और उसके परिवार को दिल्ली भेजा। इस दौरान मुझे कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अब उस परिवार की आजीविका चलनी जरूरी थी। इसके लिए मैंने नेकेड कलर्स नाम से पहल शुरू की, जिसका उद्देश्य कारीगरों द्वारा बनाई गई कला और शिल्प को कॉरपोरेट गिफ्टिंग मार्केट से जोड़कर बेचना था। बिजनेस मॉडल ऐसा था कि कुल मुनाफे का एक तिहाई कारीगरों को दिया जाता था, एक-तिहाई का उपयोग कंपनी को बनाए रखने के लिए किया जाता था, और शेष अनाथों को दान कर दिया जाता था। इससे मधुबनी के साथ तंजावुर और गोंड कारीगरों को भी लाभ हुआ। इस बीच, एक बार मैं सतपुड़ा के जंगलों में पहुंच गया। हालांकि वहां मैं गया तो लोगों को जागरूक करने के लिए था, लेकिन मेरा अपहरण कर लिया गया। बाद में उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मैंने वहां स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा जैसी कुछ बुनियादी चीजों पर काम किया। 2015 में वापस दिल्ली आया और लिवमैड मूवमेंट शुरू किया। मेरा पहला प्रोजेक्ट महिलाओं की सुरक्षा पर था। मैंने पिंक व्हिसल प्रोजेक्ट शुरू किया, और एक सीटी डिजाइन की, जिसे कंगन की तरह पहना जा सकता है, और किसी भी खतरे में, एक बटन दबाने पर, यह दो इंच के चाकू में बदल जाती है। इसके साथ ही मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के साथ एड्स के खिलाफ जागरूकता फैलाने का काम कर रहा हूं। मैं अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को ऐसे जीना चाहता हूं जैसे कि वह अंतिम हो। मैं चाहता हूं कि हर कोई मेरे द्वारा साझा किए गए प्यार के लिए मुझे याद रखे।

बिजनेस मॉडल ऐसा था कि कुल मुनाफे का एक तिहाई कारीगरों को दिया जाता था।

-2018 में यूनेस्को अंबेसडर के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

रोहित के बाद पायल

मुंबई के नायर अस्पताल में तैनात डॉ पायल तड़वी ने 22 मई को फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। इस मुस्लिम भील आदिवासी लड़की ने डॉक्टर बनकर एक बड़ी लड़ाई जीत ली थी, लेकिन कुछ सवर्ण महिला डॉक्टरों के उत्पीड़न के आगे वह हार गई।

रोहित वेमूला की याद फिर ताजा हो गई। मुंबई के नायर अस्पताल में तैनात डॉ पायल तड़वी ने 22 मई को फांसी लगाकर अपनी जान दे दी। चार साल पहले, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद के होनहार छात्र रोहित वेमूला ने भी ऐसा ही किया था। दोनों ने ही मरने से पहले लिखे गए पत्रों में कहा कि अपने जन्म के कारण ही उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ रहा था। जिस जाति में उनका जन्म हुआ था, वह उनके उत्पीड़न और फिर उनकी मौत का सबब बनकर रही।

पायल तड़वी महाराष्ट्र के जलगांव जिले की मुस्लिम भील आदिवासी थी। उसका समुदाय बहुत ही छोटा – कुछ लाख लोगों का है। इनमें शिक्षा का बहुत अभाव है और वे दिहाड़ी का काम करके ही अपना पेट पालते हैं। पायल की मां, आबेदा जिला परिषद के कार्यालय में काम करती है। उसका बाप, सलीम, मजदूरी करता है और उसे महीने में कुछ ही दिनों के लिए काम मिलता है। पायल का बड़ा भाई विकलांग पैदा हुआ था। वह शुरू से पढ़ने में तेज थी और उसने तय कर लिया कि वह डॉक्टर बनेगी। अपने मां-बाप को उसने आश्वासन दिया कि वह जिंदगी भर अपने भाई का भी ध्यान रखेगी।

पायल डॉक्टर बन गई और उसने अपने आखिरी साल में अपने गांव के पास के अस्पताल में काम किया। चूंकि वह खुद आदिवासी थी और उनकी भाषा जानती थी, बड़ी संख्या में आदिवासी महिलाओं ने अस्पताल आना शुरू कर दिया और उनको बहुत फायदा भी हुआ। इसी बीच, पायल की शादी उसके ही समुदाय के डॉक्टर हसन से हुई। दोनों का सपना था कि सरकारी अस्पताल में जितने दिन उनके लिए काम करना आवश्यक है, उसे करने के बाद वे गांव लौटकर अस्पताल खोलेंगे।

सुभाषिनी सहगल अली

पायल को मुंबई के नायर अस्पताल में काम पर लगाया गया। वहां उसे हॉस्टल में ही एक अन्य महिला डॉक्टर के साथ कमरा मिला। कई महीनों तक वह जमीन पर सोती थी और दूसरी महिला पलंग पर सोती थी। इस तरह का दुर्व्यवहार उसके साथ बढ़ता गया। तीन महिला डॉक्टरों ने उसे लगातार परेशान किया। उसकी जाति को लेकर वे टिप्पणियां करतीं, उसे बेहूदे मैसेज फोन पर भेजती और उसके काम की हमेशा आलोचना करती। पायल को आरक्षण का फायदा जरूर मिला था, लेकिन आजकल आरक्षित और अनारक्षित छात्रों के बीच केवल पांच फीसदी का ही अंतर रह गया है। पायल का उत्पीड़न बढ़ता गया। उसकी आत्मनिर्भरता घटने लगी, उसकी हंसी भी बंद होने लगी। उसने विभागाध्यक्ष से शिकायत की, तो उन्होंने भी कोई कार्रवाई नहीं की। अंत में हारकर पायल ने फांसी से लटक कर जान दे दी। रोहित वेमुला की तरह। इस घटना के खिलाफ काफी विरोध प्रदर्शन हुए। पायल का उत्पीड़न करने वाली तीन डॉक्टरों को एससी/एसटी कानून के अंतर्गत गिरफ्तार करने की मांग उठाई गई। शुरू में आना-कानी होती रही, लेकिन जब विरोध तेज हुआ, तो सरकार को कार्रवाई करनी पड़ी।

इस तरह की घटनाएं घटती हैं, तो दो तरह की प्रतिक्रियाएं देखने को मिलती हैं। एक तरफ तो लोग जाति व्यवस्था में निहित अन्याय को समाप्त करने की बात करते हैं। दूसरी ओर, अजीब प्रतिक्रिया देखने को मिलती है। एक तरह की सोच के बहुत सारे लोग एक साथ चिल्ला-चिल्लाकर यह साबित करने की कोशिश करते हैं कि पायल की आत्महत्या जैसी वीभत्स घटना का जाति-द्वेष से कोई संबंध ही नहीं है। जो लोग वर्णव्यवस्था की आलोचना करते हैं, उन्हें वे देशद्रोही, धर्मद्रोही और समाज को तोड़ने वाले के रूप में कोसते हैं। रोहित वेमुला के जीने के अधिकार के साथ, उसकी पहचान भी छीन ली गई थी। डॉ आंबेडकर ने कहा था कि अगर हमारे समाज का प्रभावशाली हिस्सा अपनी अमानवीय सोच को पहचानकर उसे बदलने के लिए प्रेरित नहीं होगा, तो फिर पूरा समाज अमानवीय ही कहलाएगा और हममें से कोई भी सभ्य होने का दावा नहीं कर पाएगा।

-लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं।

हरियाली और रास्ता

राजा, मानक और उबले हुए बीज

एक युवक की कहानी, जो सच्चाई के बल पर अडिग रहा।

राजा बूढ़े हो रहे थे। उन्होंने तय किया कि वह एक प्रतियोगिता घोषित करेंगे और जो भी युवक उसमें जीतेगा, वह राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा। राज्य के सभी युवा राजमहल में इकट्ठा हुए। राजा ने सबको एक-एक बीज दिया और कहा, आप सब यह बीज अपने घर ले जाकर गमलों में बो दीजिए, और इसकी खूब सेवा करिए। ठीक एक साल बाद मैं गमले देखूंगा और जिसका भी पौधा मुझे सबसे ज्यादा पसंद आएगा, वही राज्य का उत्तराधिकारी होगा। सभी युवक बीज लेकर घर चले गए। मानक उन्हीं में से एक युवा था। उसने घर जाकर गमले में बीज बो दिया। वह रोज उसमें पानी डालता, उसे धूप दिखाता। दो हफ्ते बीत गए, पर उसके बीज में कोई प्रगति नहीं हुई। जबकि मानक के दोस्तों के बीज बढ़ने लगे थे। मां ने समझाया, हो सकता है, तुम्हारा बीज देर से उगे। कई महीने गुजर गए। सभी के बीज पौधों का रूप लेने लगे। पर मानक का बीज वैसा ही था। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। आखिरी दिन सभी अपना-अपना पौधा लेकर राजमहल पहुंचे। मां के कहने पर मानक भी खाली गमला लेकर पहुंचा। अन्य युवकों के गमलों में खूबसूरत पेड़ निकल आए थे। कइयों में फूल, तो कुछ में छोटे-छोटे फल भी दिख रहे थे। राजा ने सबके गमलों को देख खूब तारीफ की। उनकी नजर पीछे मानक के गमले पर पड़ी। राजा ने मानक को आवाज दी, पर वह पीछे छिप गया। राजा ने पूछा, तुम छिप क्यों रहे हो? मानक बोला, महाराज, आपने जो बीज दिया था, मैंने उसकी बहुत सेवा की, पर उससे कुछ भी न निकला। राजा ने कहा, आज से मानक ही मेरा उत्तराधिकारी होगा। राजा बोले, मैंने जो बीज दिए थे, वे उबले हुए थे। आप सबने उस बीज को किसी और बीज से बदल दिया। सिर्फ मानक में वह सच्चाई थी कि उसने आकर मुझे असलियत बता दी।

सच्चाई भले हारती दिखे, पर अंततः वही सफल होती है।

खुली खिड़की

खाद्य सुरक्षा

विश्व की कई समस्याओं में अब भी खाद्य सुरक्षा प्रमुख है। वर्ष 1974 में विश्व खाद्य सम्मेलन में खाद्य आपूर्ति पर बल दिया गया। 2018 में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक खाद्य सुरक्षा रैंकिंग में भारत का 76वां स्थान है।

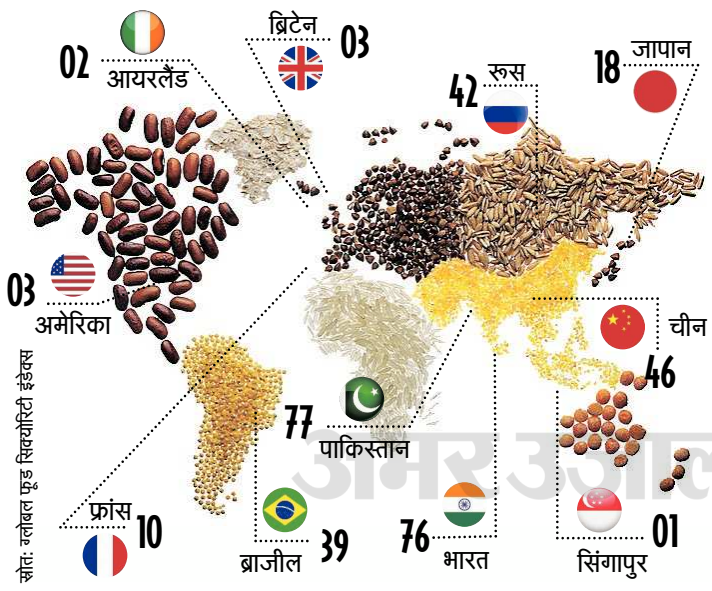

कल की कल सोचेंगे

सत्संग

सेठ जमनालाल बजाज ने संकल्प लिया था कि वह रोज किसी संत या विद्वान से सत्संग करेंगे। एक दिन वह एक संत के पास पहुंचे। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, महाराज आप जैसे संतों के दिए आशीर्वाद से मैंने अपने जीवन में आय के इतने साधन अर्जित कर लिए हैं कि मेरी सात पीढ़ियों को कमाने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। हां, आठवीं पीढ़ी की कभी-कभी मुझे चिंता होती है। संत ने कहा, सेठजी आठवीं पीढ़ी की चिंता आप न करें। कल सवेरे आप यहां आइए। आपकी चिंताओं का समाधान हो जाएगा। सेठ अगली सुबह उनकी कुटिया पर जा पहुंचे। संत ने कहा, सेठ जी, मंदिर के पास झाड़ू बनाने वाला एक परिवार झोपड़पट्टी में रहता है। पहले आप उसे एक दिन के भोजन के लिए दाल-आटा दे आओ। सेठ आटा-दाल लेकर झोंपड़ी पर पहुंचे। आवाज देते ही एक वृद्धा बाहर आई। सेठजी ने उसे खाद्यान्न थमाया, तो वह बोली, बेटा इसे वापस ले जा। आज का दाना-पानी आ गया है। सेठ ने कहा, तो कल के लिए इसे रख लो। वृद्धा बोली, ईश्वर ने आज का इंतजाम कर दिया है, तो कल का भी अवश्य करेगा। आप इसे किसी जरूरतमंद को दे देना। वृद्धा के शब्द सुन सेठ पानी-पानी हो गए। उन्होंने विरक्ति की मूर्ति उस वृद्धा के चरण छूकर आशीर्वाद मांगा और वापस हो गए। बाद में वह कहा करते थे, कर्म करते रहो, ईश्वर की कृपा से आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहेगी।

-संकलित